Open Access
IJASSH
International Journal of Arts, Social Sciences and Humanities

(A Quarterly, Refereed, & Peer Reviewed International Journal)
Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India
Journal homepage: https://ijassh.aaassher.org/
ISSN (Online): 2584-1130
Volume 3, Issue 1, March 2025; Pages 01 – 04
DOI: 10.5281/zenodo.14899046

Original Research Article

मुंशी प्रेमचंद: जीवन और साहित्यिक योगदान

शुभांगी एस. शिंदे

शोधार्थी, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई ४०००९८ महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: ssshineom@gmail.com

Received: 16 December, 2024 | Accepted: 09 January, 2025 | Published: 10 January, 2025

प्रस्तावना

मुंशी प्रेमचंद हिंदी और उर्दू साहित्य के महान उपन्यासकार और कहानीकार थे। वे सामाजिक यथार्थवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं और उनकी रचनाएँ समाज के दर्पण के रूप में कार्य करती हैं। उनका साहित्यिक योगदान भारतीय समाज, संस्कृति और राजनीति को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रारंभिक जीवन

मुंशी प्रेमचंद का जन्म ३१ जुलाई १८८० को वाराणसी जिले के लमही गाँव में हुआ था। उनका मूल नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। वे एक साधारण कायस्थ परिवार में जन्मे थे। उनके पिता अजायब राय एक डाक कर्मचारी थे और माता आनंदी देवी गृहिणी थीं। प्रेमचंद का बाल्यकाल संघर्षों से भरा था। माता-पिता की असमय मृत्यु के कारण उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

शिक्षा और प्रारंभिक जीवन

प्रेमचंद ने प्रारंभिक शिक्षा गोरखपुर और वाराणसी में प्राप्त की। उन्होंने इंटरमीडिएट तक की पढ़ाई पूरी की और बाद में शिक्षण कार्य में संलग्न हो गए। साहित्य के प्रति उनका रुझान बचपन से ही था। वे उर्दू और हिंदी दोनों भाषाओं में लेखन किया करते थे।

साहित्यिक यात्रा

मुंशी प्रेमचंद ने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत उर्दू में लेखन से की थी। उनकी पहली रचना "असरार-ए-मआबिद" उर्दू भाषा में प्रकाशित हुई थी। बाद में वे हिंदी साहित्य की ओर उन्मुख हुए और अनेक प्रसिद्ध कहानियाँ तथा उपन्यास लिखे। उन्होंने भारतीय समाज के ज्वलंत मुद्दों को अपनी रचनाओं में विशेष स्थान दिया।

साहित्यिक विकास के चरण

१. **प्रारंभिक काल (१९०१-१९१५)**: इस काल में प्रेमचंद ने उर्दू में लेखन प्रारंभ किया और उनकी रचनाएँ नैतिकता और आदर्शवाद से प्रभावित थीं। उनकी प्रारंभिक कहानियाँ समाज में नैतिकता और धार्मिक मूल्यों पर केंद्रित थीं।

२. **परिवर्तन काल (१९१५-१९२०)**: इस दौरान वे हिंदी साहित्य में अधिक सक्रिय हुए। उन्होंने सामाजिक यथार्थवाद की ओर कदम बढ़ाया और शोषित समाज की वास्तविकता को उजागर करने लगे।

३. **परिपक्वता काल (१९२०-१९३६)**: इस काल में प्रेमचंद का लेखन पूरी तरह से सामाजिक यथार्थवाद से प्रेरित हो गया। उनकी प्रमुख रचनाएँ इसी समय में आईं, जिनमें 'गोदान', 'गबन', 'निर्मला', 'रंगभूमि' जैसे उपन्यास शामिल हैं।

प्रमुख रचनाएँ

१. **कहानी संग्रह:** पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, ईदगाह, पूस की रात, ठाकुर का कुआँ, कफन आदि।

२. **उपन्यास:** गोदान, गबन, निर्मला, सेवासदन, रंगभूमि, प्रेमाश्रम आदि।

३. **नाटक:** कर्बला, संग्राम।

४. **निबंध:** समाज सुधार से जुड़े अनेक निबंध।

सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण

प्रेमचंद का साहित्य समाज सुधार, आर्थिक विषमता और जातिवाद के विरोध में था। उन्होंने अपनी रचनाओं में किसानों, मजदूरों और स्त्रियों की समस्याओं को प्रमुखता दी। वे महात्मा गांधी के विचारों से भी प्रभावित थे और स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी लेखनी के माध्यम से योगदान दिया। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से अंग्रेजी शासन की कुरीतियों पर भी प्रहार किया। उनकी कहानियाँ और उपन्यास गरीबों के संघर्ष और सामाजिक विषमता को उजागर करते हैं।

प्रेमचंद ने भारतीय समाज में व्याप्त भेदभाव, भ्रष्टाचार, शोषण और अन्याय को अपनी रचनाओं के माध्यम से उजागर किया। वे सामंती व्यवस्था और पूंजीवाद के विरुद्ध थे, क्योंकि ये व्यवस्थाएँ गरीबों और मजदूरों का शोषण करती थीं। उनकी कहानियों में किसानों की दयनीय स्थिति, महिलाओं की सामाजिक स्थिति और निम्न वर्ग के लोगों की पीड़ा का सजीव चित्रण मिलता है।

वे केवल एक लेखक ही नहीं, बल्कि समाज सुधारक भी थे। उन्होंने विधवा विवाह, बाल विवाह, दहेज प्रथा और जातिवाद जैसी कुप्रथाओं का विरोध किया। उनकी कहानियों में स्त्रियों को एक सशक्त भूमिका में चित्रित किया गया है, जो उनके समाज सुधारक दृष्टिकोण को दर्शाता है।

राजनीतिक रूप से वे राष्ट्रवादी थे और स्वराज्य तथा स्वतंत्रता संग्राम के समर्थक थे। प्रेमचंद ने अपनी लेखनी से ब्रिटिश शासन के शोषणकारी नीतियों का विरोध किया। उनकी रचनाओं में स्वतंत्रता संग्राम की झलक मिलती है। वे गांधीजी के विचारों से प्रभावित थे और अहिंसा एवं सत्याग्रह को समर्थन देते थे।

प्रेमचंद का यथार्थवाद

प्रेमचंद ने साहित्य को मनोरंजन का साधन मात्र नहीं माना, बल्कि इसे समाज सुधार का एक महत्वपूर्ण माध्यम माना। उनकी कहानियों और उपन्यासों में समाज के हर वर्ग का सजीव चित्रण मिलता है। विशेष रूप से किसानों, गरीबों,

स्त्रियों और दलितों की समस्याओं को उन्होंने अपनी रचनाओं में उकेरा। उनके उपन्यास 'गोदान' को हिंदी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ यथार्थवादी उपन्यास माना जाता है। उनकी कहानियों में समकालीन सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का सटीक वर्णन मिलता है।

उनके यथार्थवाद की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

१. **सामाजिक असमानता का चित्रण:** उनकी रचनाओं में किसानों, मजदूरों और निम्न वर्ग की समस्याओं को प्रमुखता दी गई है। उदाहरण के लिए, 'गोदान' में किसान होरी की पीड़ा का यथार्थवादी चित्रण किया गया है।

२. **नारी की स्थिति:** प्रेमचंद ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में नारी के शोषण, सामाजिक बंधनों और उनकी आकांक्षाओं को स्पष्ट रूप से दर्शाया है। 'निर्मला' और 'सेवासदन' इसी विषय पर आधारित हैं।

३. **गरीबी और शोषण:** उन्होंने अपनी रचनाओं में गरीबी और आर्थिक विषमता को प्रमुख रूप से स्थान दिया। उनकी कहानियों में धनिक वर्ग द्वारा गरीबों के शोषण का सजीव चित्रण मिलता है।

४. **स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रवाद:** प्रेमचंद की कई रचनाएँ ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आम जनमानस की पीड़ा को दर्शाती हैं। 'रंगभूमि' में एक किसान सूरदास की संघर्ष गाथा इस बात का उदाहरण है।

५. **सच्चाई और प्रामाणिकता:** प्रेमचंद के पात्र और उनके संवाद अत्यंत स्वाभाविक होते हैं, जिससे पाठकों को वे वास्तविक लगते हैं। उनकी भाषा और शैली आम जनता की भाषा के करीब थी, जिससे उनके साहित्य को व्यापक स्वीकृति मिली।

प्रेमचंद की भाषा शैली

प्रेमचंद की भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली थी। उन्होंने अपनी रचनाओं में आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया, जिससे उनकी रचनाएँ जनसाधारण के लिए सहज और ग्राह्य बनीं। उनकी लेखनी में ग्रामीण जीवन, सामाजिक कुरीतियों और भारतीय संस्कृति का अद्‌भुत समन्वय देखने को मिलता है। उनकी कहानियों और उपन्यासों में पात्रों के संवाद बहुत स्वाभाविक लगते हैं, जिससे पाठक उनके पात्रों से भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं।

अंतिम दिन और विरासत

प्रेमचंद का निधन ८ अक्टूबर १९३६ को लंबी बीमारी के कारण हुआ। उनके अंतिम दिन आर्थिक कठिनाइयों और स्वास्थ्य समस्याओं से भरे थे, लेकिन वे जीवन के अंतिम क्षण तक साहित्य सृजन में लगे रहे। उनके देहांत के बाद भी उनकी रचनाएँ अमर रहीं और हिंदी साहित्य में उनका स्थान सर्वोपरि बना रहा।

उनकी विरासत के रूप में उनकी कहानियाँ और उपन्यास आज भी भारतीय समाज को दिशा दिखाते हैं। उनकी रचनाएँ शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और साहित्य प्रेमियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनी हुई हैं। प्रेमचंद ने साहित्य के माध्यम से सामाजिक चेतना जागृत की और उनका लेखन आज भी सामाजिक समस्याओं को समझने और सुधारने में सहायक है। वे हिंदी साहित्य के युग निर्माता थे और सदैव रहेंगे।

निष्कर्ष

मुंशी प्रेमचंद का जीवन और साहित्य समाज के वास्तविक चित्रण का उदाहरण है। उन्होंने भारतीय समाज की जटिलताओं को अपनी कहानियों और उपन्यासों में उजागर किया। वे केवल एक साहित्यकार नहीं, बल्कि समाज सुधारक भी थे। उनकी लेखनी आज भी पाठकों को प्रेरणा देती है और समाज को दिशा प्रदान करती है।

संदर्भ सूची

१. **प्रेमचंद, मुंशी।** 'गोदान'। राजकमल प्रकाशन।

२. **प्रेमचंद, मुंशी।** 'मानसरोवर' (कहानी संग्रह)। साहित्य भवन।

३. **रामविलास शर्मा।** 'प्रेमचंद: एक अध्ययन'। लोकभारती प्रकाशन।

४. **विश्वनाथ त्रिपाठी।** 'प्रेमचंद और उनका युग'। वाणी प्रकाशन।

५. **अशोक वाजपेयी।** 'प्रेमचंद: कथा और विमर्श'। साहित्य अकादमी।

६. **नामवर सिंह।** 'कहानी नई कहानी'। राजकमल प्रकाशन।

७. **मृणाल पांडे।** 'हिंदी साहित्य का समकालीन परिप्रेक्ष्य'। साहित्य भवन।

८. **हरिशंकर परसाई।** 'प्रेमचंद और उनकी परंपरा'। लोकभारती प्रकाशन।

९. **श्यामसुंदर दास।** 'हिंदी साहित्य का इतिहास'। साहित्य अकादमी।

१०. **डॉ. रामचंद्र शुक्ल।** 'हिंदी साहित्य का विकास'। नागरी प्रचारिणी सभा।